वर्ण विचार

वर्ण

वर्ण भाषा का मूल आधार होते हैं। इन्हीं वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं और शब्दों से वाक्य। इसी तरह पूरी भाषा का निर्माण होता है। हिन्दी भाषा में प्रयुक्त सबसे छोटी ध्वनि वर्ण कहलाती है। वर्णों के समुदाय को वर्णमाला कहते हैं।

मानक देवनागरी वर्णमाला :-

वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं।

हमारी भाषा की वर्णमाला में 44 वर्ण हैं। उच्चारण और प्रयोग के आधार पर हिन्दी वर्णमाला के दो निम्नलिखित प्रकार हैं -

स्वर -

स्वर	मात्राएँ
आ	ा
इ	ि
ई	ी
उ	ु
ऊ	ू

ऋ	ृ
ए	े
ऐ	ै
ओ	ो
औ	ौ

इसके अतिरिक्त **अं** और **अः** अयोगवाह हैं।

इसलिए कुछ इन्हें स्वरों के साथ ही मानते हैं।

व्यजंन -

व्यजंन

क	ख	ग	घ	ङ			क-वर्ग
च	छ	ज	झ	ञ			च-वर्ग
ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़	ढ़	ट-वर्ग

त	थ	द	ध	न	त-वर्ग
प	फ	ब	भ	म	प-वर्ग
य	र	ल	व		अंत:स्थ
श	ष	स	ह		ऊष्म

गृहीत

ज	फ	ऑ

सयुक्त व्यंजन

क्ष	त्र	ज्ञ	श्र	द्य

इसके अलावा कुछ अन्य ध्वनीयाँ भी हैं; जैसे -

अनुनासिक (अँ) - माँ, बाँका, आँख

अनुस्वार (अं) - अंग, पतंग, सुन्दर, मंदिर

निम्नबिन्दु (ड़)	-	पकड़, चढ़, पढ़ाई, चढ़ाई
विसर्ग (अः)	-	अतः, अंततः, प्रातः
चन्द्र (डॉ)	-	डॉक्टर, कॉफी, कॉलिज, बॉल
नुक्ता	-	ख़त, ख़्याल, ज़िंदगी

वर्णों के भेद - स्वर

हिन्दी वर्णमाला में वर्णों को दो भागों में बाँटा गया है -

(क) स्वर :-

जिन वर्णों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता हो और जो व्यंजनों के उच्चारण में सहायक हो, वे स्वर कहलाते हैं, या दूसरे शब्दों में कह सकते हैं, जिन वर्णों (ध्वनियों) के उच्चारण में श्वास – वायु (साँस लेते समय) बिना किसी अड़चन के मुख से निकलती है, उसे स्वर कहते हैं। हिन्दी वर्णमाला में 11 स्वर होते हैं -

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

'ऋ' को लिखित रूप में स्वर माना जाता है, परंतु आजकल हिंदी में इसका उच्चारण 'रि' के समान होता है।

अंग्रेजी प्रभाव के कारण अब ऑ ध्वनि को भी हिन्दी वर्णमाला में स्थान प्राप्त हो गया है।

इसका लिपि चिह्न आधा चद्रंमा के समान होता है; जैसे - डॉक्टर, कॉलिज, डॉल, टॉफी आदि।

मात्राएँ -

स्वरों के बदले हुए स्वरूप को मात्रा कहते हैं, क्योंकि व्यजनों का प्रयोग करते समय स्वरों का प्रयोग उस रूप में ना करके उनके चिह्नों के रूप में किया जाता है। इन्हीं चिह्नों को हम मात्राएँ कहते हैं।

'अ' स्वर, क्योंकि प्रत्येक व्यंजन में सम्मिलित होता है; जैसे - कमल – क् + अ + म् + अ + ल् + अ,

इसलिए 'अ' को छोड़कर सभी अन्य स्वरों के लिए मात्राएँ बनाई गई हैं। वो क्रमशः तालिका में इस प्रकार दी गई हैं -

वर्ण **(स्वर)**	**मात्रा**	**शब्द**	**उदाहरण**
आ	ा	काल	क् + आ + ल् + अ
इ	ि	किया	क् + इ + य् + आ
ई	ी	जीवन	ज् + ई + व् + अ + न् + अ
उ	ु	तुम	त् + उ + म् + अ
ऊ	ू	दूध	द् + ऊ + ध् + अ
ऋ	ृ	मृत	म् + ऋ + त् + अ
ए	े	दे	द् + ए
ऐ	ै	है	ह् + ऐ
ओ	ो	होश	ह् + ओ + श् + अ

औ	ौ	नौकर	न् + औ + क् + अ + र् + अ

वर्णों के भेद - व्यंजन

जिन वर्णों के पूर्ण उच्चारण के लिए स्वरों की सहायता ली जाती है, वे व्यंजन कहलाते हैं। हम ये भी कह सकते हैं, जिन ध्वनियों का उच्चारण करते समय हमारी श्वास-वायु मुख के किसी भाग जैसे - तालु, ओष्ठ, दाँत आदि से टकरा कर और ठहर कर बाहर आती है, उन्हें व्यंजन कहा जाता है। व्यंजन बिना स्वरों की मदद के नहीं बोले जा सकते हैं।

हिन्दी वर्णमाला में 33 व्यंजन होते हैं; जैसे - क, ख, ग........ सभी व्यंजनों में 'अ' स्वर विद्यमान रहता है। यदि इन व्यंजनों में अ ना लगाए जाएँ तो यह अपने निम्नलिखित स्वर में लिखे जाएँगे; जैसे - क्, ख्, ग्, घ्, त् -------------- आदि।

परन्तु 'अ' लगाने पर इनका स्वरूप बदल जाएगा तथा ये इस प्रकार लिखे जाएँगे; जैसे - क, ख, ग, घ, त --------------- ड और ढ़ व्यजंन अन्य व्यंजनों से विकसित माने जाते हैं।

जैसा कि ये बताया गया है कि व्यजनों को बिना स्वरों की मदद से बोला नहीं जा सकता, परन्तु लिखते समय हम इसे स्वर के बिना भी लिख सकते हैं; जैसे -

क = क् + अ

शुद्ध रूप व्यंजन = (व्यंजन) + (स्वर)

इसी तरह हम शब्दों को लिख सकते हैं; चमन = च् + अ + म् + अ + न् + अ

संयुक्ताक्षर (संयुक्त व्यंजन) -

जो व्यंजन स्वर रहित होते हैं, उनके मेल को संयुक्ताक्षर कहते हैं -

त्र	=	त् + र् + अ
ज्ञ	=	ज् + ञ् + अ

श्र	=	श् + र् + अ
क्ष	=	क् + ष् + अ
द्य	=	द् + य् + अ

हिंदी भाषा में प्रयुक्त होने वाले इन व्यंजनों को संस्कृत से लिया गया है। संस्कृत में इनको संयुक्त व्यंजनों के लिए प्रयोग में लाने के लिए एक वर्ण के रूप में निर्माण किया गया।

क्ष से बनने वाले अक्षर जैसे - (क् + ष् + अ)

कक्षा, भिक्षा, दिक्षा, रक्षा इत्यादि हैं।

ज्ञ से बनने वाले अक्षर जैसे - (त् + र् + आ)

यज्ञ, अवज्ञा, ज्ञानी इत्यादि।

त्र से बनने वाले अक्षर जैसे - (त् + र + आ)

मात्रा, यात्रा, यत्र, तत्र।

श्र से बनने वाले अक्षर जैसे - (श् + र् + अ)

श्राप, श्रमिक, आदि।

द्य से बनने वाले अक्षर जैसे - (द् + य् + आ)

विद्या, उद्यान इत्यादि।

इसी तरह द्वित्व व्यंजन भी होते हैं। कई बार ऐसे शब्दों का उच्चारण करते हैं, जिसमें व्यंजन का साथ-साथ प्रयोग होता है, परन्तु पहली बार बिना स्वर के व्यंजन बोला या लिखा जाता है, वह द्वित्व व्यंजन कहलाता है; जैसे -

1.	छत्ता	-	छ् + अ + त् + त् +आ
2.	कच्चा	-	क् + अ + च् + च् +आ
3.	मिट्टी	-	म् + इ + ट् + ट् + ई

द्वित्व व्यंजन -

जब कोई व्यंजन अपने समरूप व्यंजन से मिलता है, तो ऐसे रूप को द्वित्व व्यंजन कहते हैं। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं - जब एक व्यंजन ध्वनि अपने समान, अन्य व्यंजन ध्वनि से संयुक्त होती है, तो उसे द्वित्व व्यंजन कहते हैं;

जैसे -

1.	बच्चा	=	ब् + अ + च् + च् +आ
2.	लट्टू	=	ल् + अ + ट् + ट् + ऊ
3.	दिल्ली	=	द् + इ + ल् + ल् + ई
4.	थप्पड़	=	थ् + अ + प् + प् + अ + ड़ + अ

वर्ण-विच्छेद

जब किसी शब्द में प्रयुक्त वर्णों को पृथक (अलग-अलग) कर दिया जाता है, तो उसे वर्ण – विच्छेद कहते हैं।

ये ध्यान देने योग्य बात है कि स्वर के बिना व्यजंन का अस्तित्व सम्भव नहीं है।

यदि हमें वर्णमाला और वर्ण-विच्छेद में सही क्रम का अनुमान हो तो हिन्दी शब्दों मे अर्थ ढूँढ़ना सम्भव व सरल हो जाता है; जैसे - पहले ये बताया गया है कि सभी व्यजंनों में 'अ' स्वर होता है; जैसे कि 'क', यदि इसमें से 'अ' हटा दिया जाए तो यह 'क्' में बदल जाएगा। उदाहरण के लिए -

1.	रमन	=	र् + अ + म् + अ + न् + अ
2.	मौसम	=	म् + औ + स् + अ + म् + अ
3.	किताब	=	क + इ + त् + आ + ब् + अ
4.	पत्र	=	प् + अ + त् + र् + अ
5.	जो	=	ज् + ओ
6.	सरल	=	स् + अ + र् + अ + ल् + अ
7.	मेला	=	म् + ए + ल् + आ
8.	मंदी	=	म् + अं + द् + ई
9.	ट्रेन	=	ट् + र् + ए + न् + अ
10.	दु:ख	=	द् + उ + (:) + ख् + अ

11.	शाखा	=	श् + आ + ख् + आ
12.	कक्षा	=	क् + अ + क् + ष् + आ
13.	क्षमा	=	क् + ष् + आ + म् + आ
14.	पशु	=	प् + अ + श + उ
15.	बीमारी	=	ब् + ई + म् + आ + र् + ई
16.	गूँगा	=	ग् + ऊ + अँ + ग् + आ
17.	मुख	=	म् + उ + ख् + अ
18.	भवन	=	भ् + अ + व् + अ + न् + अ